Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

मूल्य आधारित शिक्षा

डॉ० गिरीश कुमार वत्स
प्राचार्य, ऐ० टी० एम० एस० कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, अछेजा, हापुड़, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Volume 5, Issue 2

Page Number : 91-96

Publication Issue :

March-April-2022

Article History

Received : 01 March 2022

Published : 17 March 2022

सारांश – आज भारत के युवा वर्ग को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उनमें सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने को प्रेरित करें तथा वे मानवता पर खरे सिद्ध हो सकें, निःसन्देह विद्यार्थियों में इस प्रकार के मूल्यों को स्थापित करने के लिये शिक्षकों को तैयार करना पड़ेगा यदि हमारे शिक्षक ऐसे मूल्यों से युक्त होंगे तभी वे सशक्त हो सकेंगे और अपने विद्यार्थियों में मूल्यों का प्रस्फुटन कर सकेंगे। जब हम शिक्षा की बात करते हैं तो सामान्य अर्थो में यह समझा जाता है कि इसमें हमें वस्तुगत ज्ञान प्राप्त होता है तथा जिसके बल पर कोई रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी शिक्षा से व्यक्ति समाज में आदरणीय बनता है। समाज और देश के लिए इस ज्ञान का महत्व भी है क्योंकि शिक्षित राष्ट्र ही अपने भविष्य को सँवारने में सक्षम हो सकता है। आज कोई भी राष्ट्र विज्ञान और तकनीक की महत्ता को अस्वीकार नहीं कर सकता, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका उपयोग है। वैज्ञानिक विधि का प्रयोग कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में करके ही हमारे देश में हरित क्रांति और श्वेत क्रांति लाई जा सकी है। अतः वस्तुपरक शिक्षा हर क्षेत्र में उपयोगी है। शिक्षा व्यक्ति के मानसिक व बौद्धिक विकास का महत्त्वपूर्ण साधन होता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को कुसंस्कारों व मानसिक गुलामी से बचाया जा सकता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नई चेतना व जोश पैदा कर सामाजिक विकृतियों, अंधविश्वासों, गैर बराबरी की स्थितियों, क्रूरता व शोषण के विरुद्ध खड़ा किया जा सकता है। आज नई पीढ़ी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नित नई उपलब्धियां प्राप्त कर रही है। अनेक भौतिक उपलब्धियां प्राप्त कर अंतरिक्ष में मनुष्य भेजने की तैयारियां चल रही हैं। मनुष्य ने शिक्षा से असीमित संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं, लेकिन आज हम शिक्षा में ऐसी कमी अनुभव करते हैं, जिसका निदान आवश्यक है।

मुख्य शब्द : मूल्य आधारित शिक्षा, मूल्य शिक्षा का जीवन में महत्व व आवश्यकता, वर्तमान शिक्षा में मूल्यों का आभाव, मूल्य आधारित शिक्षा हेतु सुझाव।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना– जब हम शिक्षा की बात करते हैं तो सामान्य अर्थो में यह समझा जाता है कि इसमें हमें वस्तुगत ज्ञान प्राप्त होता है तथा जिसके बल पर कोई रोजगार प्राप्त किया जा सकता है । ऐसी शिक्षा से व्यक्ति समाज में आदरणीय बनता है । समाज और देश के लिए इस ज्ञान का महत्व भी है क्योंकि शिक्षित राष्ट्र ही अपने भविष्य को सँवारने में सक्षम हो सकता है । आज कोई भी राष्ट्र विज्ञान और तकनीक की महत्ता को अस्वीकार नहीं कर सकता, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका उपयोग है । वैज्ञानिक विधि का प्रयोग कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में करके ही हमारे देश में हरित क्रांति और श्वेत क्रांति लाई जा सकी है ।अतः वस्तुपरक शिक्षा हर क्षेत्र में उपयोगी है ।परंतु जीवन में केवल पदार्थ ही महत्वपूर्ण नहीं हैं । पदार्थो का अध्ययन आवश्यक हैा राष्ट्र की भौतिक दशा सुधारने के लिए तो जीवन मूल्यों का उपयोग कर हम उन्नति की सही राह चुन सकते हैं । हम जानते हैं कि भारत में लोगों के बीच फैला भ्रष्टाचार किस तरह से विकास की धार को मोथरा किए हुए है । आज की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है – पढ़–लिखकर धन कमाना । चाहे धन कैसे भी आता हो, इसकी परवाह न की जाए । यही कारण है कि शिक्षित वर्ग भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में सबसे आगे हैं । शिक्षा प्राप्ति की एक सुविचारित नीति होनी चाहिए । छात्रों की शुरू से ही यह जानकारी देनी चाहिए कि जीवन में आगे चलकर तुम्हें किन समस्याओं से जूझना होगा । छात्रों को पता होना चाहिए कि जीने के मार्ग अनेक हैं तथा उस मार्ग को ही चुनना श्रेयस्कर है जो व्यक्ति विशेष के स्वभाव के अनुकूल हो । नैतिक शिक्षा की बातों में सत्य, क्षमा, दया, ईमानदारी, अहिंसा आदि बताने से कुछ खास हासिल नहीं होता यदि हम इन ऊँची–ऊँची बातों को जीवन में उतारने का बालकों को अवसर न प्रदान करें । बालकों की सहज बुदधि में प्रयोगात्मक सचाइयाँ अधिक सहजता से प्रवेश करती हैं । कोरे उपदेश उन्हें प्रभावित कर सकते तो आज समाज में इतनी बेईमानी और इतना भ्रष्टाचार न फैला होता शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों को संबद्ध करने का अर्थ यह नहीं है कि बालकों के निरंतर भारी होते हुए बस्ते में एक और किताब का बोझ डाल दिया जाए । इससे उनके जीवन में कोई गुणात्मक परिवर्तन नहीं आ सकता क्योंकि बच्चे समझते हैं कि यह भी एक विषय है जिसमें अच्छे अंक लाने होंगे ।

1. मूल्य आधारित शिक्षा– किसी भी सभ्य समाज के लिए शिक्षा प्राण हैं तथा जीवन मूल्य उसकी आत्मा, मूल्यों का सम्बन्ध जीवन के दृष्टिकोण से है यदि मूल्यों को जीवन कहा जाय तो अतिश्योक्ति नही होगी। व्यक्ति के जीवन में मूल्य का विकास सामाजिकरण की प्रक्रिया के साथ–2 होता है। व्यक्ति समाज के बिना जीवित नही रह सकता। **रेमन्ट ने कहा है कि** ''समाज विहीन व्यक्ति एक कोरी कल्पना है।'' व्यक्ति स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है वह समाज से अलग रहकर ऐसे जीवित नहीं रह सकती, जैसे मछली जल के बिना। अतः व्यक्ति और समाज को अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि इन दोंनों का अस्तित्व एक दूसरे में निहीत है। मूल्यों की अवधारणा से तात्पर्य सिद्धान्त, आदर्श तथा नैतिकता से है। सामाजिक सम्पर्क द्वारा नैतिक विकास होता है। हम कुछ मूल्यों को प्राथमिकता देते है कुछ को त्यागते हैं मानव व्यवहार केवल विचारों द्वारा ही नहीं अपितु भावों के द्वारा भी होता है। स्थायी भावों के आधार पर ही मूल्यों का चयन होता है। मूल्य का अपना महत्व इसके अन्दर छिपा होता है। मूल्य अभिवृतियां एवं आदर्श हमारे व्यवहार को निर्देशित करते हैं। शिक्षा व्यक्ति के मानसिक व बौद्धिक विकास का महत्त्वपूर्ण साधन होता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को कुसंस्कारों व मानसिक गुलामी से बचाया जा सकता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नई चेतना व जोश पैदा कर सामाजिक विकृतियों, अंधविश्वासों,

गैर बराबरी की स्थितियों, क्रूरता व शोषण के विरुद्ध खड़ा किया जा सकता है। आज नई पीढ़ी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नित नई उपलब्धियां प्राप्त कर रही है। अनेक भौतिक उपलब्धियां प्राप्त कर अंतरिक्ष में मनुष्य भेजने की तैयारियां चल रही हैं। मनुष्य ने शिक्षा से असीमित संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं, लेकिन आज हम शिक्षा में ऐसी कमी अनुभव करते हैं, जिसका निदान आवश्यक है।

2- ewY; f"k{kk dk thou esa egRo o vko";drk& ewY; og fl)kar gS tks fdlh lH; laLd`fr okys lekt dh vk/kkj uhao Mkyrs gSA gekjs thou dks vkuUne;] lq[knk;h cukusa esa ewY;ksas dk egRo vrqyuh; gSA orZeku esa ;g ,d Toyar ,oa fpUrk dk fo"k; cu x;k gS fd gekjs ewY;ksa dk gkzl fnu&izfrfnu gekjs dk;ksZ esa lkQ fn[kkbZ ns jgk gS lekt ewY;ghu fn[kkbZ iM+ jgk gSA ^^jk"Vªh; ikB~;p;kZ dh :ijs[kk ¼2000½ esa Hkh fo|ky;h f'k{kk d¢ lHkh Lrj¨a ij ewY;¨a d¢ fodkl dh ckr dgh x;h gSA^^ Á'u mBrk gS fd ewY;¨a d¢ fodkl gsrq ikB~;Øe dk d©u fuekZ.k djs\ dSls g¨\ mldk fØ;kUo;u d©u djs\ fu%lUnsg ;g lkjs dk;Z v/;kidksa }kjk gh fd;s tk ldrs gSa ijUrq bld¢ fy;s v/;kidksa esa Lo;a d¢ fy;s okafNr ewY;¨a dh LFkkiuk g¨uh vko';d gS RkHkh os vius fo|kÆFk;¨a esa bu ewY;¨a d¢ fodkl d¢ Áfr rRij g¨ ld¢axsA tc rd muds thou eas ewY;ksa dk dksbZ LFkku ugha gksxk] ewY;ksa ds izfr vuqHkwfr ugha g¨xh rc rd os ewY;¨a dh leqfpr f'k{kk fo|kÆFk;¨a d¨ ugha ns ld¢axs vkSj mUgsa dqlaxfr] Hkz"Vkpkj] y{; foghurk vkfn cqjkb;¨a ls ugha cpk ld¢axsA vkt Hkkjr d¢ ;qok oxZ d¨ ,slh f'k{kk dh vko';drk gS t¨ muesa lkekftd] uSfrd] lkaLÑfrd ,oa vk/;kfRed ewY;¨a d¨ vius thou esa viukus d¨ Ásfjr djas rFkk os ekuork ij [kjs fl) g¨ ld¢a] fu%lUnsg fo|kÆFk;¨a esa bl Ádkj d¢ ewY;¨a d¨ LFkkfir djus d¢ fy;s f'k{kd¨a d¨ rS;kj djuk iM+sxk ;fn gekjs f'k{kd ,sls ewY;¨a ls ;qDr g¨axs rHkh os l'kDr g¨ ld¢axs v©j vius fo|kÆFk;¨a esa ewY;¨a dk ÁLQqVu dj ld¢axsA

आज भारतीय समाज में लोगों द्वारा जिस प्रकार के व्यवहार का प्रकटीकरण किया जा रहा है उससे ऐसा आभास हो रहा है कि नैतिक मूल्य विलुप्त होते जा रहे हैं समाज मूल्यहीन दिखाई पड़ रहा है। यही कारण है कि आज भौतिक प्रकृति के बावजूद भी देश को अराजकता की स्थिति से गुजरना पड़ रहा है क्षेत्रवाद, भाषावाद, भ्रष्टाचार, सम्प्रदायवाद, आंतकवाद जैसे विवादों को बढावा देकर क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति हेतु राष्ट्रीयता के भाव को कुण्ठित किया जा रहा है। मूल्य आधारित शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र को किसी भी प्रकार की बुराई, हिंसा, भ्रष्टाचार तथा उत्पीड़न के खिलाफ आधार प्रदान करती है ।प्राचीन काल के महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, सांन्दीपन एवं चाणक्य जैसे मूल्यों से युक्त अध्यापकों ने ही श्री राम, श्री कृष्ण एवं सम्राट चन्द्रगुप्त जैसे विद्यार्थियों को उत्पन्न किया अध्यापकों को अपने व्यवहार से जन सामान्य के जीवन में मूल्यों के सम्प्रेषण हेतु एक प्रेरक का कार्य करता है इस कारण से अध्यापकों का जीवन मूल्यों से युक्त होना अति आवश्यक हैएक गुणवान गुरू अपने शिष्य में अच्छे जीवन मूल्यों को विकसित कर लेता है और अवांछित बुराइयों को उसमें से निकाल देता है। अतः यह आवश्यक है कि

शिक्षा के माध्याम से छात्र–छात्राओं को मूल्यों की शिक्षा दी जाय और यह आवश्यक रूप से सिखाया जाय कि शिक्षा प्राप्त करके वही व्यक्ति समाज में स्थान पा सकता है जो मूल्यों के प्रति अपनी आस्था तथा विश्वास कायम करें। सन् 1950 में जब भारतीय संविधान का गणतंत्रीय रूप आया तो उसमें मूल्यों की चर्चा की गई। भारतीय गणराज्य को मूल्यों पर आधारित धर्मनिरपेक्ष स्थिति के साथ में भी प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास आवश्यक बताया गया। 1948–49 में डॉ0 राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया उसमें निम्न प्रकार अनुशंसा की गई–(1) सभी शिक्षण संस्थाओं में दो मिनट शांत अवस्था में रहने के बाद प्रार्थना सभाओं का आयोजन किया जाय। (2) स्नातक स्तर पर छात्र–छात्राओं को भारतीय साहित्य, धर्म व दर्शन का ज्ञान कराया जाय। उक्त सुझाव मूल्य शिक्षा से ही सम्बन्धित हैं–1959 में डॉ0 श्री प्रकाश की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ जिसकी संस्तुति धार्मिक व नैतिक शिक्षा पर ही रही। इन्होंने छात्र–छात्राओं में उचित आचरण के विकास पर बल दिया। इसके साथ ही शिक्षक के कार्यक्रम में परिवार को स्थान दिया गया, प्रार्थना से कक्षा कार्य का प्रारम्भ हो, धार्मिक मूल्यों का ज्ञान कराया जाय, पाठ्यक्रम में समाज सेवा को सम्मिलित किया जाय, स्वतन्त्र चिन्तन, वाद–विवाद तथा आलोचनात्मक व्याख्या के गुणों का विकास किया जाय तथा आयोजन के कार्यक्रमों से छात्राओं को अवगत कराया जाय। 1964–66 में डॉ0 डी0 एस0 कोठरी की अध्यक्षता में एक और कमीशन का गठन हुआ। इस कमीशन की अनुशंसा यह रही कि छात्रों में शिक्षा के द्वारा सामाजिक वातावरण की भावना का विकास, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति निष्ठा, विशिष्ट साहित्य के अध्ययन की भावना का विकास, विभिन्न धर्मों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन जैसे गम्भीर अध्ययन विषय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाएँ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में भी इस बात पर गहरी चिन्ता प्रकट की गई कि ''जीवन के लिये आवश्यक मूल्यों का हास हो रहा है और मूल्यों पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है शिक्षा क्रम में ऐसे परिवर्तन की जरूरत है जिससे सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा सशक्त साधन बन सके।'' मूल्यों का विकास केवल बच्चों तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि व्यस्को को भी मूल्य विकसित करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। परिवार एवं स्कूल के अतिरिक्त मूल्यों के विकास के सन्दर्भ में हमें व्यक्तिगत प्रयास भी करने चाहिए जो कि वर्तमान समय की आवश्यकता है। इस प्रकार मूल्यों के विकास में एक रणनीति बनायी जाय। जिससे हमारे समाज को दिशा, दशा एवं आदर्शता प्रदान हो सकें। एन.सी.ई.आर.टी ने 1988 में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम कहा जाता है। पाठ्यक्रम को 1997 में राष्ट्रीय शिक्षा ने स्वीकृती दी तथा उक्त पाठ्यक्रम को विद्यालय स्तर का अनिवार्य अंग बनाने पर बल दिया तथा इसमें मूल्यों के विकास जैसे ईमानदारी, सत्यता, सहनशीलता आदि पर तथा शिक्षकों को अन्धविश्वासों से दूर रहने पर बल दिया गया है। इसी की सहायता से व्यक्ति तथा समाज का संतुलित विकास किया जा सकता है। यह आशा की जाती है कि ये क्रियाऐं व्यक्तियों में मूल्यों के विकास में सहायक होगी अतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास करने के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं में अच्छी शिक्षण अधिगम परिस्थितियों का विकास किया जाय।

3. वर्तमान शिक्षा में मूल्यों का आभाव– इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा से हमने असंख्य भौतिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं, लेकिन वर्तमान संदर्भ में शिक्षा मानवीय मूल्यों, परंपरा व आदर्शों की उपेक्षा कर एकांगी व संवेदनहीन होती जा रही है। संवेदनहीनता की स्थितियां पूरे परिवेश में देखी जा सकती हैं। मूल्यों व आदर्शों के अभाव में दिशाहीन विद्यार्थी हिंसक, क्रूर व अमानवीय वृत्तियों की

ओर अग्रसर हो रहे हैं। अपने महापुरुषों के संदेशों, अपनी परंपरा व आदर्शों से अनजान नई पीढ़ी बेलगाम हो रही है। आधुनिकता की चकाचौंध व प्रदर्शन की प्रवृत्ति ने उन्हें घोर अवसरवादी व अनैतिक बना दिया है। हिंसा, बलात्कार, चोरी, डकैती व आतंक की ओर व्यक्ति तभी बढ़ता है, जब उसे सही मार्गदर्शन, उचित शिक्षा व स्वस्थ वातावरण नहीं मिलता। तात्कालिक लाभ व भोगवादी प्रवृत्ति ने मनुष्य को संवेदनशून्य व हिंसक बना दिया है। ऐसे में विद्यार्थियों को नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों से परिचित करवाना आवश्यक हो जाता है। शिक्षा यदि विद्यार्थियों में प्रेम, दया, विश्वास, करुणा व त्याग की भावनाएं पैदा नहीं करती, तो ऐसी शिक्षा भविष्य में निरर्थक व अनुपयोगी सिद्ध होती है। शिक्षा के माध्यम से केवल भौतिक संपन्नता प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं होता, शिक्षा द्वारा हम एक अच्छे इनसान और बेहतर नागरिक भी बनने चाहिएं। इसके लिए अपनी परंपरा, आदर्शों व जीवन मूल्यों से जुड़ना आवश्यक हो जाता है। मानसिक विकास के बिना भौतिक विकास सार्थक नहीं हो सकता है। वर्तमान शिक्षण संस्थाओं में लिंग व जाति–भेद की स्थितियां तथा गैर बराबरी की घटनाएं अकसर देखी जाती हैं। पूंजीवादी सभ्यता के प्रभाव के कारण समाज में गैर बराबरी की स्थितियां व अन्य सामाजिक विकृतियां बढ़ रही हैं। संपन्न व अमीर वर्ग के विद्यार्थी अच्छे शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं और गरीब व वंचित वर्ग का विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हो जाता है। इन भेदभाव की स्थितियों के कारण वंचित वर्ग के विद्यार्थियों में अलगाव, संत्रास व आक्रोश की भावनाएं पनपती हैं, जो स्वस्थ समाज के निर्माण में बाधक होती हैं। व्यवस्था को संवेदनशील होना चाहिए, ताकि शोषित व उत्पीडित जनता को समान अवसर मिलें और एक गरीब विद्यार्थी भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर मुख्यधारा में शामिल हो सके। जातीय व आर्थिक आधार पर शिक्षा का वर्गीकरण उचित नहीं है। समन्वय शिक्षा का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य होता है। शिक्षा का व्यापारीकरण भी उचित नहीं है। आजकल ऐसे निजी शिक्षण संस्थान खुल रहे हैं, जिनका लक्ष्य केवल पैसा कमाना है, उन्हें विद्यार्थियों के भविष्य की चिंता नहीं होती। ऐसी संस्थाओं में स्तरीय व गुणवत्तायुक्त शिक्षा न मिलने पर विद्यार्थियों को रोजगार के लिए भटकना पड़ता है। शिक्षण संस्थानों की बागडोर शिक्षाविदों के हाथों में होनी चाहिए, तभी विद्यार्थी रोजगारोन्मुख शिक्षा प्राप्त कर समाज के लिए उपयोगी व बेहतर इनसान बन सकते हैं। विद्यार्थियों में मानवीय भावनाएं व संवेदनशीलता पैदा करने के लिए उन्हें भारतीय आदर्शों, मानवीय मूल्यों व संस्कारों से जोड़ना आवश्यक है।

4. मुल्य आधारित शिक्षा हेतु सुझाव व निष्कर्ष– वर्तमान शिक्षा पद्धति और मूल्यों में कोई समन्वय नहीं है। यह सर्वविदित है कि आज विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए भाषण, नोटस तथा बने बनाये उत्तरों को दोहराने का कौशल ही विद्यार्थी की परीक्षा का मापदण्ड है विद्यार्थी न तो अपने अस्तित्व को पहचान पाता है, न हीं पुस्तकीय ज्ञान उसकी सहायता करता है। ये गिरते हुए मूल्य हमारी शिक्षा के लिए चुनौती है। इस लिए विद्यार्थियों को अपनी रूचि, योग्यता, क्षमता, स्वःअध्ययन के लिए पूर्ण स्वतन्त्रा दी जाये। जिससे विद्यार्थी का समाजिक, मानसिक, बौद्विक, चारित्रिक तथा नैतिक विकास हो सके। शिक्षा में सुधार करके ही विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। श्रेष्ठ मूल्यों व नैतिक आदर्शों से जुड़कर भूख, शोषण व भय से मनुष्य को मुक्त करवा सकते हैं। खेलों व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों से जोड़कर विद्यार्थियों को सही दिशा दी जा सकती है। परंपरागत मूल्यों को आवश्यक संशोधन के साथ स्वीकार कर लेना चाहिए। परंपरा के साथ नवीन ज्ञान–विज्ञान का समावेश शिक्षा को अधिक प्रभावपूर्ण बना सकता है। शिक्षा को अधिक से अधिक रोजगारपरक बनाया जाए, तभी विद्यार्थी अपने भविष्य को सुरक्षित बनाकर बेहतर इनसान बन सकते हैं। शिक्षक हमारी शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ होते हैं। योग्य समर्पित,

ईमानदार, सहृदय व निष्ठावान शिक्षक वर्तमान शिक्षा के स्वरूप में बदलाव ला सकते हैं। इस संदर्भ में शिक्षक का उत्तरदायित्व महत्त्वपूर्ण है, उसे पूर्ण करने के लिए उसे निरंतर अध्ययन, मनन व कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है। वर्तमान संदर्भ में शिक्षा केवल भौतिक उपलब्धियां प्राप्त करने का साधन ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के बौद्धिक व मानसिक विकास का भी सशक्त माध्यम होनी चाहिए। वह विद्यार्थियों में नई चेतना, नई उमंगों को जगाते हुए उन्हें मानवीय मूल्यों व आदर्शों से भी जोड़े। शिक्षा में भौतिकवादी दृष्टिकोण विद्यार्थी को अराजक वृत्तियों की ओर ले जाता है। समाज में फैली विकृतियों को मानवीय मूल्यों, आदर्शों व संवेदनशीलता से जोड़ना होगा। टीवी व सोशल मीडिया के माध्यम से फैल रही अपसंस्कृति पर अंकुश लगाना भी आवश्यक है। शिक्षा का लक्ष्य बेहतर इनसान तैयार करना होना चाहिए। संवेदनशील व उदार व्यक्ति वर्तमान परिदृश्य को बदलने में सक्षम होता है। शिक्षा के माध्यम से समाज में सामंजस्य, समन्वय, सद्भाव, सेवा, समर्पण व त्याग की भावनाएं विकसित होनी चाहिए। इसके लिए व्यवस्था, शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी व सद्भावनाएं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

सन्दर्भ

1. शर्मा, एस.एस, शर्मा, अन्जना, (2011):''शिक्षा के दार्शनिक एव समाजशास्त्रीय आधार,'' एच, पी, भार्गव बुक हाऊस 4/230 कचहरी घाट आगरा,पृ0 159–162
2. सिंह. आर. पी., (1997): ''ए स्टडी आफ वैल्यूज आफ अरबन एंड रूरल एडोलसेंट स्टूडेंट'', इडियन एजूकेशनअब्स्ट्रेक्स,, अंक–2, जनवरी 1997
3. शुक्ला, सी• एस•, (2009):''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार,'' अनुभव पब्लिशिग हाउस इलाहाबाद पृ0–19
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा,सारांश (2000), नई दिल्ली, एन•सी•ई•आर•टी• पृ0–2
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986):''मानव संसाधन विकास मंन्नालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग), नई दिल्ली पृ0–19
6. सक्सेना, सरोज,(2000): ''शिक्षा के दार्शनिक एव समाज शास्त्रीय आधार'', साहित्य प्रकाशन आगरा पृ0–257
7. मैनी, डी0. (2005) : ''मानव मूल्य – परक शब्दावली का विश्वकोष,,'' खण्ड (पंचम), प्रकाशक प्रभात कुमार शर्मा द्वारा सरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
8. पाण्डेय आर. ,(2000): ''मूल्य शिक्षा के परिपेक्ष्य'', आर. लाल बुक डिपो मेरठ, पृ0–153
9. पेरी एवं सक्सेना, एन.आर. स्वरूप,(2005):''शिक्षा के सिद्धान्त'', आर. लाल. बुक डिपो मेरठ, पृ0–643